महर्षि वाल्मीकि की राम कथा और वाल्मीकि समाज

डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

सप्त सिन्धु फाउंडेशन

सप्त सिन्धु फाउंडेशन
चकमोह (हमीरपुर)
हिमाचल प्रदेश - 176039

ISBN : 978-81-974933-3-1

प्रथम संस्करण	:	जुलाई, 2024
द्वितीय संस्करण	:	सितंबर, 2024
तृतीय संस्करण	:	जनवरी, 2025 (संशोधित)
मुद्रित प्रतियां	:	2000
मूल्य	:	100 रुपये
मुद्रक	:	मैसर्ज एसोसिएटिड प्रिंटर्स, चंडीगढ़

महर्षि वाल्मीकि की राम कथा और वाल्मीकि समाज

डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

सप्त सिन्धु फाउंडेशन

डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री मूलतः अध्यापक हैं, पर कुछ समय वकालत भी की। पत्रकारिता से भी जुड़े रहे हैं। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के धर्मशाला परिसर के निदेशक रहे। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में ही आंबेडकर पीठ के अध्यक्ष के पद पर भी कार्य किया । पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के उपाध्यक्ष भी रहे। वे हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के कुलपति भी रहे । आपातकाल का विरोध करने पर जेलयात्रा भी करनी पड़ी । इसी प्रकार तिब्बत की स्वतंत्रता के पक्ष में इंडिया गेट दिल्ली में प्रदर्शन करने पर बंदी बनाए गए। वे भारत-तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक हैं। हिंदुस्थान समाचार न्यूज एजेंसी के निदेशक भी रहे। हिंदुस्थान समाचार के संस्थापक दादा साहिब आप्टे के प्रथम जीवनीकार डॉ. अग्निहोत्री की पंद्रह पुस्तकें छप चुकी हैं। जम्मू कश्मीर , गुरूवाणी , आम्बेडकर चिन्तन, वाल्मीकि समाज उनके अध्ययन के विशेष क्षेत्र हैं । दुनिया के अनेक देशों की यात्रा कर चुके अग्निहोत्री आजकल शताब्दियों पहले बंद हो चुकी अंगकोर मंदिर की तीर्थ-यात्रा को म्याँमार, थाईलैंड के स्थल मार्ग से पुनः शुरू करवाने के लिए प्रयासरत हैं । तवांग तीर्थ यात्रा के आयोजक भी हैं। वर्तमान में हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के उपाध्यक्ष हैं।

पुस्तक परिचय

महर्षि वाल्मीकि पर देश विदेश में गहरा अध्ययन हुआ है । राम कथा और उसके इतिहास को लेकर भी दुनिया भर में शोध कार्य हो ही चुका है । लेकिन महर्षि वाल्मीकि, उनकी राम कथा और सप्त सिन्धु क्षेत्र , विशेष कर पंजाब, के वाल्मीकि समाज को केन्द्र में रख कर इस विषय पर शोध कार्य नहीं के बराबर हुआ है । क्या कारण है कि सप्त सिन्धु क्षेत्र , देश के अन्य हिस्सों की बनिसवत, सबसे ज्यादा देर तक अरबों , तुर्कों व मुगलों के नियंत्रण में रहा लेकिन उसके बावजूद इस हिस्से में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या सबसे ज्यादा है और व विदेशी मज़हबों में मतान्तरित नहीं हुईं ? ये ऐसे प्रश्न हैं जिन पर हमारे समाज विज्ञानियों को नए सिरे से शोध करनी चाहिए । फिलहाल भारतीय समाज के ऐसे अनेक क्षेत्र शोध कार्य से अछूते हैं । डा. भीम राव रामजी आम्बेडकर ने 'अस्पृश्य कौन थे' ? लिख कर इसकी शुरुआत की थी लेकिन उनके देहान्त के बाद कार्य सही दिशा में आगे नहीं बढ़ सका । प्रस्तुत पुस्तिका उसी दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है ।

978-81-974933-3-1

मूल्य : 100 रुपये